मलूक दासजी की बानी

[जीवन-चरित सहित]

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद

मूल्य ... पैसे
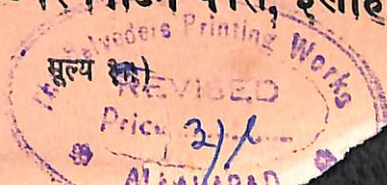
मलूकदासजी की बानी

[जीवन चरित्र-सहित]

जिसमें

उन महात्मा के चुने हुए शब्द, कबित्त
और साखियाँ छपी हैं और गूढ़
शब्दों के अर्थ भी फुट
नोट में लिखे हैं।

—:o:—

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स
इलाहाबाद—२

[मूल्य ।।।)

चतुर्थ बार १०००]

सन् १९७१

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan.

मलूकदासजी का जीवन-चरित्र

बाबा मलूकदास जी ज़िला इलाहाबाद के कड़ा नामी गाँव में बैसाख बदी ५ सम्वत १६३१ विक्रमी में लाला सुन्दरदास खत्री कक्कड़ के घर प्रगट हुए। जब पाँच बरस के हुए तो मकान से बाहर गली में खेला करते थे और खेल के दर्मियान जो कुछ काँटा कूड़ा करकट गली में पड़ा होता उसे उठाकर एक कोने में डाल देते कि किसी के पाँव में न लग कर कष्ट न हो। एक दिन की बात है कि जब वह मामूल मुवाफ़िक खेल रहे थे एक पूरे महात्मा उसी गली में आ निकले और उनको देख कर लोगों से पूछा कि यह किसका लड़का है और यह सुनकर कि वह सुन्दरदास का बेटा है बाप को बुलवाया और कहा कि अचरज है कि यह लड़का गली में इस तरह अकेला खेल रहा है इसकी अजानु बाहु यानी लम्बी भुजा इस बात की सूचक हैं कि या तो यह सात दीप का अखंड राजा हो या ऊँची साध गति को प्राप्त हो—बाबा मलूकदास जी की इतनी लम्बी बाँह थीं जो खड़े होने से घुटने के नीचे पहुँचती थीं। इस बात को सुनकर सुन्दरदास तो अचरज में आकर हक्के बक्के हो गये पर बाबा मलूकदासजी बोले कि महात्मा जी आप ठीक कहते हैं।

मलूकदासजी साध सेवा लड़कपन ही से बड़ी नेष्ठा से करते थे, जो साधू और भूखे आते उनका सम्मान और खाने पीने की फिकर रखते। एक दिन का ज़िकर है कि एक मंडली साधुओं की आई और भोजन माँगा। बाबाजी ने घर के भंडार घर में सेंध लगा कर जो कुछ सामग्री थी निकाल ली और साधुओं को खिला दिया। जब उनकी माँ रसोई के समय सीधा निकालने गईं तो वहाँ कुछ न पाया बेचारी रोने लगीं कि अब घर के लिए कहाँ से खाना बनाऊँ और बोलीं कि यह काम मल्लू का है। इसी दर्मियान में बाबा मलूकदासजी आ पहुँचे और पूछा कि माँ क्यों रोती है। माँ बोली कि बेटा तुम्हारी करतूत पर रोती हूँ कि भंडारे की सब सामग्री साधुओं को खिलाकर बाप माँ को भूखा रक्खोगे। बाबाजी बोले कि मैंने तो एक दाना नहीं लिया है जिस पर माँ झुँझला कर उन्हें भंडार घर में पकड़ ले गई कि देख सब बर्तन तो खाली पड़े हैं लेकिन वहाँ पहुँच कर जो देखा तो सब सामग्री ज्यों की त्यों भरी पाई।

जब इनकी अवस्था दस ग्यारह बरस की हुई तो बाप ने इन्हें व्योपार में लगाना चाहा और कम्मल थोक में लेकर कहा कि इनको बाजार में बेच लाया करो। देहात में हर आठवें दिन पैंठ लगती है सो यह आठवें दिन कम्मल बेचने जाते थे और इस दर्मियान में कोई साधू या ग़रीब इनसे माँगता तो उसे योंही दे देते।

एक बार यह एक दूर के गाँव में कम्मल बेचने गये लेकिन उस दिन न तो कोई कम्मल बिका और न कोई मँगता मिला जिसे मुफ्त दे देते. पूरा गट्ठर कम्मलों का कड़ी धूप में सिर पर लाद कर घर लाने में थक गये और इसलिये रास्ते में एक नीम के पेड़ की छाया में बैठ गये कि एक मजदूर आया और कहा कि एक टका पर हम तुम्हारा गट्ठर घर पर पहुँचा देंगे। मजदूर तेज चाल से आगे बढ़ गया और बाबाजी बेफ़िकर भजन करते हुए घर लौटे। मज़दूर के अकेले गठरी लाने पर इनकी माँ को संदेह हुआ

कि कहीं कुछ कम्मल निकाल न लिये हों इसलिये उसे थोड़ा सा खाना देकर खिलाने के बहाने कोठरी में बन्द कर दिया कि जब बेटा आवे तो गठरी का माल सहेज कर उसे जाने दें। जब मलूकदासजी पहुँचे तो वह क्रोध से बोली कि ऐसी बेपरवाही क्यों करते हो अब गट्ठर खोल कर कम्मल गिन लो अगर पूरे निकलें तो कोठरी से मज़दूर को जाने दो मैंने उसे खाने को दे दिया है। बाबाजी घबराये हुए कोठरी खोल कर भीतर घुसे तो देखा कि मज़दूर गायब है सिर्फ एक टुकड़ा रोटी का पड़ा है जिसे प्रसाद के भाव से बाबाजी ने उठाकर खा लिया और माँ के चरनों पर गिरकर बोले कि तू बड़ी भाग्यमान है कि ईश्वर ने तुझे मज़दूर के रूप में दर्शन दिया और मुझे बहका दिया अब मैं इसी कोठरी में बैठता हूँ, जब तक न कहूँ मत खोलना और न शोर गुल करना। इस तरह बाबाजी भगवन्त के ध्यान में बैठ गये जब दूसरे या तीसरे दिन साक्षात दर्शन पाये तब बाहर निकले और माँ के चरनों पर मत्था टेका। फिर इसी तरह ध्यान और भजन का नेम कर लिया।

अब तो बाबा मलूकदासजी की कीर्ति चारों ओर फैली और हजारों आदमी दूर दूर से दर्शन को आने लगे और नित प्रति सतसंग और सत उपदेश से अनेक जीव लाभ उठाने लगे।

बाबाजी के चमत्कार और करामत की ऐसी ही और इससे बढ़ कर बहुत सी कथा प्रसिद्ध हैं जिन सबके यहाँ लिखने की जरूरत नहीं है लेकिन थोड़े से कौतुक जो उनके प्रेमी स्वग्रामी लाला रामचरनदासजी मेहरोत्रे खत्री ने लिख भेजे हैं वह संक्षेप में नीचे छापे जाते हैं, पाठक जन जैसा जिसका निश्चय हो मानें। इसमें सन्देह नहीं कि पूरे साध और मालिक के सच्चे भक्त सर्व-समरथ हैं परन्तु वह अपनी शक्ति को कहाँ तक बाहर प्रगट करते हैं इसको हर एक अन्तर अभ्यासी जानता है :—

(१) कहा जाता है कि एक बार भारी अकाल पड़ा यहाँ तक कि पेड़ों में पत्ती तक खाने को नहीं रह गई, हजारों आदमी वर्षा के लिये हाहाकार करते बाबाजी के चरनों पर आ गिरे। बाबाजी ने पहिले तो अपनी असमरत्थता बहुत कुछ बयान की पर जब वह लोग किसी तरह न माने तो दया बस उनके साथ मैदान में प्रार्थना करने को चले। इस बीच में बाबाजी का एक गुरुमुख चेला लालदास आया और अपने गुरु को गद्दी पर न पाकर हाल पूछा तो मालूम हुआ कि गाँव वालों के साथ बस्ती के बाहर पानी बरसाने के लिये प्रार्थना करने गये हैं। यह सुनकर चेले को इन्द्र पर बड़ा क्रोध आया कि वह ऐसा अहंकारी है कि जब हमारे गुरु महाराज उठ कर जावें तब वह पानी बरसावे यह कह कर एक साधू का भंग-घोटना उठाकर बोला कि अभी एक सोंटा इन्द्र को ऐसा लगाता हूँ कि इन्द्रासन सहित यहीं गिरता है परन्तु भंग-घोटने का सोंटा उठाते ही इन्द्र काँप उठा और उसी दम बड़े वेग से पानी बरसने लगा। बाबाजी अभी मैदान में न पहुँचे थे कि वर्षा देख कर रास्ते से आश्रम को लौट आये और यहाँ सब वृत्तान्त सुनाकर चेले पर बहुत अप्रसन्न हुए कि देवताओं पर इस तरह जोर न चलाना चाहिये— उनसे राजी से काम लेना चाहिये। चेले ने बड़ी दीनता से छिमा माँगी जिस पर गुरुजी ने आज्ञा की कि जाकर पृथ्वी परिक्रमा कर आओ तब तुम्हारा अपराध छिमा होगा। चेला यह आज्ञा पाते ही गुरु को दंडवत करके रवाना हुआ और गंगा नदी में कूद पड़ा और वहाँ से समुद्र में एक जहाज के पास जा निकला। खला-सियों ने उसे बहता देखकर निकाल लिया और जहाज़ के मालिक सौदागर के पास

लाये। सौदागर ने पूछा कि तुम्हारा जहाज़ कहाँ तबाह हुआ जिस पर उसने जवाब दिया कि कहीं नहीं। हम अपने गुरु कि आज्ञा से पृथ्वी-परिक्रमा को निकले हैं और उसके विशेष प्रश्न करने पर कुल हाल कह सुनाया और अपने गुरु का पूरा पता ठिकाना बतला दिया और फिर समुद्र में कूद कर गोता मार कर गायब हो गया। सौदागर अचरज में पड़ गया और उसके मन में गुरुजी की महिमा पूरे तौर पर समा गई।

(२) कुछ दिन पीछे सौदागर का जहाज़ बड़े खतरे में पड़ा तब उसने सङ्कल्प किया कि अगर जहाज़ बाबा मलूकदासजी की दया दृष्टि से बच जाय तो मैं चौथाई माल उनके चरणों में भेंट करूँगा। दया से जहाज़ बच गया और सौदागर बाबाजी की सेवा में चौथाई माल लेकर कड़ा में हाज़िर हुआ और सब हाल कह सुनाया। उस समय के बादशाह आलमगीर का वज़ीर बाबाजी के पास मौजूद था। उसका मन मोती की एक क़ीमती माला देखकर बहुत ललचाया जिसे सौदागर बाबाजी के गले में पहिराने को हाथ में लिये था। बाबाजी सौदागर से बोले कि किसी का माल सेंत में लेना दोष की बात है पर हमने तुम्हारे जहाज़ को तबाही से बचाने में बड़ा परिश्रम किया है यह कह कर अँगौछे को अपने कन्धे से उठा कर पीठ को दिखलाया जिस पर बहुत से दाग़ मौजूद थे। फिर माला को सौदागर के हाथ से लेकर वज़ीर के गले में डाल दिया।

(३) वज़ीर वहाँ से मगन होकर बादशाह के यहाँ आया और बाबा मलूकदास का सब हाल कह सुनाया और बड़ी महिमा गाई। आलमगीर ने जो बड़ा कट्टर था हुक्म दिया कि तीन अहदी तुर्त जायँ और बाबा मलूकदास को जिस तरह से बैठे हों लाकर हाजिर करें। उन तीन अहदियों में दो भले आदमी थे और एक लुच्चा जिसने हठ किया कि जिस सूरत में बाबाजी बैठे होंगे उसी दम पकड़ लावेंगे परन्तु मौज से यह तीसरा अहदी रास्ते में ही मर गया। बाक़ी दो बाबाजी के आश्रम पर पहुँचे और बाबाजी के इस कहने को कि दूसरे दिन सवेरे उनके साथ चलेंगे मंजूर किया। लेकिन पहिले ही दिन साँझ को बाबाजी सतसंग से अन्तरध्यान हो कर दिल्ली जा पहुँचे और बादशाही महल में जहाँ बादशाह अपनी बेगम के साथ बैठे थे जा खड़े हुए। बादशाह ने घबराकर पूछा कि तुम कौन हो? बाबाजी ने जवाब दिया कि मलूका जिसको आपने याद किया है। बेगम हट गईं और बादशाह ने बाबाजी को बड़े आदर से बैठाया और उनकी जाति पूछी। बाबाजी ने जवाब दिया कि फ़क़ीरों के जाति पाँत नहीं होती इस पर बादशाह ने उनके खाने को खिचड़ी पकाने का हुक्म दिया जब पक कर देगची आई और खोली गई तो उसमें से खिचड़ी के बदले कुत्ते के पिल्ले जीते हुए निकल आये जिन्हें देखकर बाबाजी ने बादशाह से पूछा कि आप यही खिचड़ी खाते हैं। बादशाह ने बावरची पर बहुत क्रोध कर दूसरी खिचड़ी बनाने का हुक्म दिया। इस बार देगची खोलने पर उसमें से राख निकली। बाबाजी बोले कि यह खाना फ़क़ीरों के योग्य है और उसमें से एक चिटकी राख लेकर फूँक दिया तो ऐसी आँधी पानी दिल्ली भर में आया कि शहर ग़ारत होने लगा। फिर बादशाह की प्रार्थना पर बाबाजी ने दया करके वह उत्पात हटा लिया। ऐसे ही लिखा है कि आलमगीर ने कुएँ के मुँह पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जिसके जवाब में बाबाजी ने अधर में बेसहारे लटकते हुए भजन किया। इन सब चमत्कारों को देखकर शाह आलमगीर को विश्वास हुआ कि

बाबा मलूकदास पूरे साहबकमाल हैं और उनसे बड़ी दीनता के साथ कुछ माँगने को कहा परन्तु बाबाजी ने इनकार किया, फिर बादशाह के बहुत गिड़गिड़ाने पर बोले कि अच्छा तो एक जज़िया टिकस जो हिन्दुओं पर लगा है उस को कड़ा के लिये माफ़ कर दो, दूसरे दोनों अहदियों को एक एक सूबा बख्श दो और परवाना लिख दो कि मुझको यहाँ न लावें। बादशाह ने उसी दम यह दोनों हुक्म लिखकर बाबाजी के हवाले किये जिनको लेकर बाबाजी सतसङ्ग में आधी रात को फिर प्रगट हुए और अँगौछा जिसको सिर से पैर तक डाले रहा करते थे उठाकर सतसंगियों से बोले कि आज बड़ी देर हो गई अब तुम लोग अपने अपने घर जाओ। सबेरे दोनों अहदियों को शाही परवाना दिखलाया उनमें से एक तो सूबेदारी के लालच से लौट आया लेकिन दूसरे ने कहा कि मैं ऐसा दरबार छोड़कर बादशाहत मिले तो उसको भी धूल समझता हूँ—इस दूसरे अहदी को क़बर आज तक बाबाजी की समाधि के पास मौजूद है।

(४) बाबाजी अपना मकान बनवा रहे थे उसमें बहुत से मज़दूर दब गये जब निकाले गये तो सब जीते निकले और बयान किया कि बाबाजी की सूरत के एक आदमी ने हमारी दबी हुई दशा में प्रगट होकर रक्षा की।

(५) एक अहीरन का इकलौता लड़का मर गया माँ के बहुत रोने और प्रार्थना करने पर बाबाजी ने अपनी उँगली चीरकर ज़रासा लोहू लड़के के मुँह में डाल कर जिला दिया।

बाबा मलूकदास के गुरू बिट्ठलदास द्राविड़ देश के एक महात्मा थे। बाबाजी गृहस्त आश्रम में थे और उनके एक बेटी हुई, परन्तु थोड़े ही काल में स्त्री और पुत्री दोनों का देहान्त हो गया।

सम्बत् १७३९ में १०८ बरस की अवस्था को प्राप्त होकर बाबाजी ने चोला छोड़ा। गुप्त होने के छः महीना पहिले उन्होंने अपने भतीजे रामस्नेही से कहा कि तुम हमारी गद्दी पर बैठो। उन्होंने अपनी असमरत्थता बयान की जिस पर बाबाजी ने ढारस दी की ताक़त बख्शी जायगी तब वह गद्दी पर बैठे और बाबाजी के बारहों गुरमुख चेलों ने जो एक से एक बढ़कर थे आकर उनको मत्था टेका और सेवा में आये।

जब बाबाजी के चोला छोड़ने का दिन आया तो उन्होंने अपने चेलों और कुटुम्बियों को बुलाकर कहा कि दोपहर को जब तुम लोगों के अंतर में घंटा और संख का शब्द गाजने लगे तब समझना कि हमने चोला छोड़ दिया और हमारे शरीर को गंगा में प्रवाह कर देना, जलाना मत, सो इस आज्ञा का पूरे तौर पर पालन किया गया और कड़े में उनकी समाधि बना दी गई।

कहते हैं कि बाबाजी का मृतक शरीर पहिले प्रयाग के घाट पर ठहरा और एक घाटिये से पीने को पानी माँगा और फिर डुबकी मार कर काशी में निकला और वहाँ भी पानी और फिर क़लम दवात माँगी जिससे लिख दिया कि मलूका काशी पहुँचा, वहाँ से ग़ोता लगाकर जगन्नाथपुरी में पहुँचा। जगन्नाथजी ने अपने पंडों को स्वप्न दिया कि समुद्र तट पर एक रथी है उसे उठा लाओ। जब वह रथी आई तो पंडे उसे मूर्ति के सम्मुख धर कर आप बाहर निकल आये और मन्दिर के पट आप से आप बंद हो गये। बाबाजी ने जगन्नाथजी से प्रार्थना की कि हमारे विश्राम को आपके पनाले के

पास की स्थान और भोजन को आपके भोग के दाल चावल के पछोरन किनका का रोट और तरकारी के छीलन की भाजी मिले जगन्नाथजी ने स्वीकार करके आज्ञा दी कि हमारे भोग से बढ़कर सवाद तुम्हारे भोग में होगा। जगन्नाथजी के पनाले के पास मलूकदासजी का स्थान अब तक मौजूद है और उनके नाम का रोट अब तक जारी है, जो जात्रियों को जगन्नाथजी के भोग के साथ प्रसाद में मिलता है।

बाबा मलूकदासजी के पंथ की मुख्य गद्दियाँ मौज़ा कड़ा ज़िला प्रयाग, जैपुर, इस्फहाबाद, गुजरात, मुलतान, पटना (बिहार), सीताकोयल (दक्खिन), कलापुर, नैपाल और काबुल में हैं। उनके रचे हुए ग्रन्थ भी कितने ही हैं जिनमें मुख्य रत्नखान और ज्ञानबोध समझे जाते हैं परन्तु वह ऐसे हिन्दी अच्छर में हैं जिन्हें उनके कुनबेवाले आप नहीं पढ़ सकते और न उनके पढ़ने का जतन करते छपवाने की बात तो दूर है।

यह थोड़े से चुने हुए शब्द और साखियाँ जो छापी जाती हैं हम को कृपा पूर्व्वक बाबाजी के परम भक्त लाला रामचरनदासजी मेहरोत्रे खत्री कड़ा वाले (बाबू शिव प्रसादजी अकौन्टेन्ट इलाहाबाद बैंक के पिता) ने बाबाजी के असल दस्तख़ती पुस्तक से नक़ल करा दी हैं जिसके लिये हम उनको अनेक धन्यवाद देते हैं।

संत चरण-धूर,

एडिटर, संतबानी पुस्तक-माला।

बाबा मलूकदासजी

अपने मुख्य चेलों के साथ

मलूकदासजी की बानी

सतगुरु और निज रूप की महिमा

॥ शब्द १ ॥

अब मैं सतगुरु पूरा पाया।
मन तैं जनम जनम डहकाया[1] ॥ १ ॥
कई लाख तुम रंडी[2] छाँड़ी, केते बेटी बेटा।
कितने बैठे सिरदा[3] करते, माया जाल लपेटा ॥ २ ॥
कितने के तुम पित्र कहाये, केते पित्र तुम्हारे।
गया बनारस कर कर थाके, देत देत पिंड हारे ॥ ३ ॥
कई लाख तुम लसकर जोड़े, केते घोड़े हाथी।
तेऊ गये बिलाय छिनक में, कोई रहा न साथी ॥ ४ ॥
आवागवन मिटाया सतगुरु, पूजी मन की आसा।
जीवन मुक्त किया परमेसुर, कहत मलूकादासा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

हमारा सतगुरु बिरले जानै।
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रूप बखानै ॥ १ ॥
की तो जानै दास कबीरा, की हरिनाकस पूता।
की तो नामदेव औ नानक, की गोरख अवधूता ॥ २ ॥
हमरे गुरु की अद्‌भुत लीला, ना कछु खाय न पीवै।
ना वह सोवै ना वह जागै, ना वह मरै न जीवै ॥ ३ ॥
बिन तरवर फल फूल लगावै, सो तो वा का चेला।
छिन में रूप अनेक धरत है, छिन में रहै अकेला ॥ ४ ॥

(१) ठगाया। (२) स्त्री। (३) सिजदा, दंडवत।

बिन दीपक उँजियारा देखै, एँड़ी समुँद थहावै।
चींटी के पग कुंजर[1] बाँधै, जा को गुरू लखावै ॥ ५ ॥
बिन पंखन उड़ि जाय अकासे, बिन पंखन उड़ि आवै।
सोई सिष्य गुरू का प्यारा, सूखे नाव चलावै ॥ ६ ॥
बिन पायन सब जग फिरि आवै, सो मेरा गुरु भाई।
कहै मलूक ता की बलिहारी, जिन यह जुगत बताई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

नाम तुम्हारा निरमला, निरमोलक हीरा।
तू साहेब समरत्थ, हम मल मुत्र के कीरा ॥ १ ॥
पाप न राखै देंह में, जब सुमिरन करिये।
एक अच्छर के कहत ही, भौसागर तरिये ॥ २ ॥
अधम-उधारन सब कहैं, प्रभु बिरद तुम्हारा।
सुनि सरनागत आइया, तब पार उतारा ॥ ३ ॥
तुझ सा गरुवा औ धनी, जा में बड़ई समाई।
जरत उबारे पांडवा, बाव[2] न लाई ॥ ४ ॥
कोटिक औगुन जन करै, प्रभु मनहि न आनै।
कहत मलूकादास को, अपना करि जानै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हरि समान दाता कोउ नाहीं, सदा बिराजैं संतन माहीं ॥१॥
नाम बिसंभर बिस्व जियावै, साँझ बिहान रिजिक[3] पहुंचावैं॥२॥
देइ अनेकन मुख पर ऐने,[4] औगुन करै सो गुन कर मानैं ॥३॥
काहू भाँति अजार[5] न देई, जाही को अपना कर लेई ॥४॥
घरी घरी देता दीदार, जन अपने का खिजमतगार ॥५॥
तीन लोक जाके औसाफ[6], जन का गुनह करै सब माफ ॥६॥
गरुवा ठाकुर है रघुराई, कहैं मलूक क्या करूँ बड़ाई ॥७॥

---

(१) हाथी। (२) गरम हवा। (३) अहार। (४) दर्पण। (५) दुख। (६) गुण।

॥ शब्द ५ ॥

सदा सोहागिन नारि सो, जा के राम भतारा।
मुख माँगे सुख देत हैं, जगजीवन प्यारा ॥ १ ॥
कबहुँ न चढ़ै रँडपुरा[१], जानै सब कोई।
अजर अमर अबिनासिया, ता को नास न होई ॥ २ ॥
नर देंही दिन दोय की, सुन गुरजन मेरी।
क्या ऐसों का नेहरा, मुए बिपति घनेरी ॥ ३ ॥
ना उपजै ना बीनसै, संतन सुखदाई।
कहैं मलूक यह जानि कै, मैं प्रीति लगाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नैया मेरी नोके चलने लागी।
आँधी मेंह तनिक नहिं डोलै, साहु चढ़े बड़भागी ॥ १ ॥
रामराय डगमगी छोड़ाई, निर्भय कड़िया[२] लैया।
गुन लहासि की हाजत[३] नाहीं, आछा साज बनैया ॥ २ ॥
अवसर पड़ै तो पर्बत बोझै, तहूँ न होवै भारी।
धन सतगुरु यह जुगत बताई, तिन की मैं बलिहारी ॥ ३ ॥
सूखे पड़ै तो कछु डर नाहीं, ना गहिरे का संसा।
उलटि जाय तो बार न बाँकै, या का अजब तमासा ॥ ४ ॥
कहत मलूक जो बिन सिर खेवै, सो यह रूप बखानै।
या नैया की अजब कथा, कोइ बिरला केवट जानै ॥ ५ ॥

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

मुरसिद मेरा दिल दरियाई, दिल गहि अंदर खोजा।
जा अंदर में सत्तर काबा, मक्का तीसो रोजा ॥ १ ॥
सातो तबक औलिया जा में, भेद न होय जुदाई।
सम्स कमर[४] ठाढ़े निमाज में, दरसै जहाँ खोदाई ॥ २ ॥

(१) रँड़ापा। (२) डाँड़ा। (३) जरूरत। (४) सूरज और चाँद।

हवा हिरिस खुदी[१] में खोवा, अनल हक्क जहँ जानी ।
बिन चिराग रोसन सब खाना, ता में तख्त सुभानी[२] ॥ ३ ॥
बिना आब[३] जहँ बहु गुल फूले, अब्र[४] बिना जहँ बरसै ।
हूर बिना सरोद[५] सब बाजे, चस्म बिना सब दरसै ॥ ४ ॥
ता दरगाह मुसल्ला डारे, बैठा कादिर काजी ।
न्याव करै सीने की जानै, सब को राखै राजी ॥ ५ ॥
जो देखै तो कमला होवै, तब कमाल पद पावै ।
साहेब मिलि तब साहिब होवै, ज्यों जल बूँद समावै ॥ ६ ॥
तिस के पल[६] दीदार किये तें, नादिर होय फकीरा ।
मारे काल कलंदर दिल सों, दरदमंद धर धीरा ॥ ७ ॥
ऐसा होय तब पीर कहावै, मनी मान जब खोवै ।
तब मलूक रोसन-जमीर होय, पाँव पसारे सोवै ॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

अवधू का कहि तोहि बखानों ।
गगन मँडल में अनहद बोलै, जाति बरन नहिं जानों ॥ १ ॥
अहो अहो मैं कहा कहों तोहि, नाँव न जानों देवा ।
सुन्न महल की जुगति बतावे, केहि बिधि कीजे सेवा ॥ २ ॥
तीरथ भरमैं बड़े कहावैं, बाद करत हैं सोई ।
अंधधुंध चल जात निरंजन, मर्म न जानै कोई ॥ ३ ॥
अबिगत गति तुम्हरी अबिनासी, घट घट रहत चलाया ।
जहाँ तहाँ तेरी माया खेलै, सतगुरु मोहि लखाया ॥ ४ ॥
वेद पढ़े पढ़ि पंडित भूले, ज्ञानी कथि कथि ज्ञाना ।
कह मलूक तेरी अद्भुत लीला, सो काहू नहि जाना ॥ ५ ॥

———

(१) आशा, तृष्णा और अहङ्कार । (२) मालिक । (३) पानी । (४) बादल । (५) राग । (६) छिन मात्र ।

बिनती

॥ शब्द १ ॥

अब तेरी सरन आयो राम ॥ १ ॥
जबै सुनिया साध के मुख, पतित - पावन नाम ॥ २ ॥
यही जान पुकार कीन्ही, अति सतायो काम ॥ ३ ॥
बिषय सेती भयो आजिज[1], कह मलूक गुलाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

साँचा तू गोपाल, साँच तेरा नाम है।
जहवाँ सुमिरन होय, धन्य सो ठाम है ॥ १ ॥
साँचा तेरा भक्त, जो तुझको जानता।
तीन लोक को राज, मनै नहिं आनता ॥ २ ॥
झूठा नाता छोड़ि, तुझे लव लाइया।
सुमिरि तिहारो नाम, परम पद पाइया ॥ ३ ॥
जिन यह लाहा[2] पायो, यह जग आइ कै।
उतरि गयो भव पार, तेरो गुन गाइ कै ॥ ४ ॥
तुही मातु तुही पिता, तुही हितु बंधु है।
कहत मलूकादास, बिना तुझ धुंध[3] है ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

एक तुम्हैं प्रभु चाहौं राज ॥ टेक ॥
भूपति रंक सेंति[4] नहिं पूछौं, चरन तुम्हार सँवारयो काज ॥१॥
पाँचो पंडव जरत उबारयो, द्रुपद सुता को राख्यो लाज ॥२॥
संत - बिरोधी ऐसो मारो, ज्यों तीतर पर छूटे बाज ॥३॥
तुम्हें छोड़ि जाने जो दूजा, तेहि पापी पर परिहै गाज ॥४॥
कहैं मलूक मेरो प्रान रमइया, तीन लोक ऊपर सिरताज ॥५॥

———

(१) लाचार। (२) लाभ। (३) अँधियारा। (४) मुफ्त।

प्रेम

॥ शब्द १ ॥

कौन मिलावै जोगिया हो, जोगिया बिन रह्यो न जाय ॥टेक॥
मैं जो प्यासी पीव की, रटत फिरों पिउ पीव।
जो जोगिया नहिं मिलिहै हो, तो तुरत निकासूँ जीव ॥ १ ॥
गुरुजी अहेरी मैं हिरनी, गुरु मारैं प्रेम का बान।
जेहि लागै सोइ जानई हो, और दरद नहिं जान ॥ २ ॥
कहैं मलूक सुनु जोगिनी रे, तनहिं में मनहिं समाय।
तेरे प्रेम के कारने जोगी, सहज मिला मोहिं आय ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

तेरा मैं दीदार - दिवाना।
घड़ी घड़ी तुझे देखा चाहूँ, सुन साहेब रहमाना ॥ १ ॥
हुआ अलमस्त खबर नहिं तन की, पिया प्रेम पियाला।
ठाढ़ होउँ तो गिरि गिरि परता, तेरे रँग मतवाला ॥ २ ॥
खड़ा रहूँ दरबार तुम्हारे, ज्यों घर का बंदाजादा[१]।
नेकी की कुलाह[२] सिर दीये, गले पैरहन[३] साजा ॥ ३ ॥
तौजी और निमाज न जानूँ, ना जानूँ धरि रोजा।
बाँग जिकिर[४] तबही से बिसरी, जबसे यह दिल खोजा ॥ ४ ॥
कहैं मलूक अब कजा[५] न करिहौं, दिल ही सों दिल लाया।
मक्का हज्ज हिये में देखा, पूरा मुरसिद पाया ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दर्द - दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा।
एक अकीदा[६] लै रहे, ऐसे मन - धीरा ॥ १ ॥
प्रेम पियाला पीवते, बिसरे सब साथी।
आठ पहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी ॥ २ ॥

---

(१) गुलाम। (२) टोपी। (३) मेखली। (४) सुमिरन। (५) छूटी हुई नमाज़ पढ़ना। (६) प्रतीत।

उनकी नजर न आवते, कोइ राजा रंक।
बंधन तोड़े मोह के, फिरते निहसंक ॥ ३ ॥
साहेब मिल साहेब भये, कछु रही न तमाई[1]।
कहैं मलूक तिस घर गये, जहँ पवन न जाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मोरा पीर निरंजना, मैं खिजमतगार।
तुहीं तुहीं निस दिन रटौं, ठाढ़ा दरबार ॥ १ ॥
महल मियाँ का दिलहिं में, औ महजिद काया।
छूरी देता ज्ञान की, जब तें लौ लाया ॥ २ ॥
तसबी फेरौं प्रेम की, हिया करौं निवाज।
जहँ तहँ फिरौं दिदार को, उसही के काज ॥ ३ ॥
कहैं मलूक अलेख के, अब हाथ बिकाना।
नाहीं खबर वजूद[2] की, मैं फकीर दिवाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अब की लागी खेप हमारी।
लेखा दिया साह अपने को, सहजै चीठी फारी ॥ १ ॥
सौदा करत बहुत जुग बीते, दिन दिन टूटी आई।
अब की बार बेबाक भये हम, जम की तलब छोड़ाई ॥ २ ॥
चार पदारथ नफा भया मोहि, बनिजे कबहुँ न जइहौं।
अब डहकाय बलाय हमारी, घर ही बैठे खइहौं ॥ ३ ॥
बस्तु अमोलक गुप्तै पाई, ताती बायु न लाओं।
हरि हीरा मेरा ज्ञान जौहरी, ताही सों परखाओं ॥ ४ ॥
देव पितर औ राजा रानी, काहू से दीन न भाखौं।
कह मलूक मेरे रामै पूँजी, जीव बराबर राखौं ॥ ५ ॥

---

(१) इच्छा चाह। (२) आपा, शरीर।

भक्त महिमा

॥ शब्द १ ॥

सोई सहर सुबस बसे, जहँ हरि के दासा।
दरस किये सुख पाइये, पूजै मन आसा ॥ १ ॥
साकट के घर साधजन, सुपने नहिं जाहीं।
तेइ तेइ नगर उजाड़ है, जहँ साधू नाहीं ॥ २ ॥
मूरत पूजैं बहुत मति, नित नाम पुकारैं।
कोटि कसाई तुल्य हैं, जो आतम मारैं ॥ ३ ॥
पर दुख दुखिया भक्त है, सो रामहिं प्यारा।
एक पलक प्रभु आप तें, नहिं राखैं न्यारा ॥ ४ ॥
दीन-बंधु करुना-मयी, ऐसे रघुराजा।
कहैं मलूक जन आपने को, कौन निवाजा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

देव पितर मेरे हरि के दास। गाजत हौं तिन के बिस्वास ॥१॥
साधू जन पूजों चित लाई। जिनके दरसन हिया जुड़ाई ॥२॥
चरन पखारत होइ अनंदा। जन्म जन्म के काटे फंदा ॥३॥
भाव भक्ति करते निस्काम। निसि दिन सुमिरैं केवल राम॥४॥
घर बन का उनके भय नाहीं। ज्यों पुरइनि रहता जल माहीं॥५॥
भूत परेतन देंव बहाई। देवखर लीपै मोर बलाई ॥६॥
बस्तु अनूठी संतन लाऊँ। कहैं मलूक सब भर्म नसाऊँ ॥७॥

मन और माया के चरित्र

॥ शब्द १ ॥

माया काली नागिनी, जिन डसिया सब संसार हो ॥टेक॥
इन्द्र डसा ब्रह्मा डसा, डसिया नारद ब्यास।
बात कहत सिव को डसा, जेहि घरि एक[1] बैठे पास हो ॥ १ ॥

---

(१) घड़ी भर।

कंस डसा सिसुपाल डसा, उन रावन डसिया जाय।
दस सिर दै लंका मिली, सो छिन में दई बहाय हो ॥ २ ॥
बड़े बड़े गारुड़[1] डसे, कोउ इक थिर न रहाय।
कच्छ[2] देस गोरख डसा, जा का अगम बिचार हो ॥ ३ ॥
चुनि चुनि खाये सूरमा, जा की करै जग आस।
हम से गरीबन को गनै, कहत मलूकादास हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

क्या प्रपंच यह पंच रचा ॥ टेक ॥
आसा तृष्ना सब घट व्यापी, मुनि गंधर्व कोई न बचा ॥१॥
उठे बिहान पेट का धंधा, माया लाय किया जग अंधा ॥२॥
तन मन छीन कुटुंबे लाया, छिप रही आप लोग भर्माया॥३॥
औंधी खोपरी फिरैं बिचारे, भूले भक्ति छुधा के मारे ॥४॥
बिनती करत मलूकादासा, थकित भया तेरा देख तमासा॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

राम नाम क्यों लीजै मन राजा।
काहु भाँति मेरे हाथ न आवे, महा बिकट दल साजा ॥ १ ॥
कई बार इन पैंड़े चलते, लस्कर लूटा मेरा।
चहुँ जुग राज बिराजी करता, अदब न माने तेरा ॥ २ ॥
येही सब घट दुन्द मचावे, मारै रैयत खासी।
काहू नृप को नजर न आने, एते मान मवासी ॥ ३ ॥
कह मलूक जिय ऐसी आवे, छल बल करि येही गहिये।
इसहि मारि काया गढ़ लेके, तब खासे घर रहिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हम से जनि लागे तू माया।
थोरे से फिर बहुत होयगी, सुनि पैहें रघुराया ॥ १ ॥

(१) साँप के बिष उतारने का मन्त्र जानने वाले। (२) गोरखनाथ की जन्म भूमि।

अपने में है साहेब हमरा, अजहूँ चेतु दिवानी ।
काहू जन के बस परि जैहौ, भरत मरहुगी पानी ॥ २ ॥
तर ह्वै चितै[1] लाज करु जन की, डारु हाथ की फाँसी ।
जन तें तेरो जोर न लहिहै[2], रच्छपाल अबिनासी ॥ ३ ॥
कहै मलूका चुप करु ठगनी, औगुन राखु दुराई ।
जो जन उबरै राम नाम कहि, तातें कछु न बसाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

माया के गुलाम, गीदी क्या जानें बंदगी ॥ टेक ॥
साधुन से धूम धाम, करत चोरन के काम ।
द्विजन को पूजा देयँ, गरीबन से रिन्दगी ॥ १ ॥
कपट की माला लिये, छापा मुद्रा तिलक दिये ।
बगल में पोथी दाबे, लायो फरफंदगी ॥ २ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ु दगाबाजी आस ।
भजहु गोबिन्द राय, मेटैं तेरी गंदगी ॥ ३ ॥

॥ चेतावनी ॥

॥ शब्द १ ॥

जा दिन का डर मानता, सोइ बेला आई ।
भक्ति न कीन्ही राम की, ठकमूरी[3] खाई ॥ १ ॥
जिन के कारन पचि मुवा, सब दुख की रासी ।
रोइ रोइ जन्म गँवाइया, परी मोह की फाँसी ॥ २ ॥
तन मन धन नहि आपना, नहिं सुत औ नारी ।
बिछुरत बार न लागई, जिय देखु बिचारी ॥ ३ ॥
मनुष जन्म दुर्लभ अहै, बड़े पुन्ने पाया ।
सोऊ अकारथ खोइया, नहिं ठौर लगाया ॥ ४ ॥

---

(१) नीची निगाह कर देख । (२) चलेगा । (३) चकचौंधी, हवास पैतरे हो जाना ।

साध सँगत कब करोगे, यह औसर बीता ।
कहे मलूका पाँच में, बैरी एक न जीता ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

राम मिलन क्यों पइये, मोहिं राखा ठगवन घेरि हो ॥
क्रोध तो काला नाग है, काम तो परघट काल ।
आप आप को खैंचते, मोहिं कर डाला बेहाल हो ॥ १ ॥
एक कनक और कामिनी, यह दोनों बटपार ।
मिसरी को छुरी गर लाय के, इन मारा सब संसार हो ॥ २ ॥
इन में कोई ना भला, सब का एक बिचार ।
पैंड़ा मारैं भजन का, कोइ कैसे के उतरै पार हो ॥ ३ ॥
उपजत बिनसत थकि पड़ा, जियरा गया उकताय ।
कहैं मलूक बहु भरमिया, मो पै अब नहिं भरमो जाय हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

इन्द्री खाय गई जग सारा ।
निस दिन चरा करे बन काया, कोई न हाँकनहारा ॥ १ ॥
पीप रक्त करे तन झँझरा, सरबस जाय नसाई ।
जैसी भाँति काठ घुन लागै, बहुरि रहै फोकलाई[1] ॥ २ ॥
होता बीज औंट के लोहू, सो देंही का राजा ।
ऐसी बस्तु अकारथ खोवै, अपना करै अकाजा ॥ ३ ॥
मनुवा मार भजे भगवंतहिं, या मति कबहुँ न ठाना[2] ।
जियरा दोय घरी के सुख को, कहत मलूक दिवाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अजब तमासा देखा तेरा । ता तें उदास भया मन मेरा ॥१॥
उतपति परलय नित उठ होई । जग में अमर न देखा कोई ॥२॥
माटी के पुतरे माया लाई । कोइ कहे बहिन कोई कहे भाई ॥३॥

---

(१) छिलका । (२) दृढ़ किया ।

झूठा नाता लोग लगावै । मन मेरे परतीत न आवै ॥४॥
जबहीं भेजे तबहिं बुलावै । हुकुम भया कोइ रहन न पावै ॥५॥
उलटत पलटत जग की अँचली[1] । जैसे फेरै पान तमोली ॥६॥
कहत मलूक रह्यो मोहिं घेरे । अब माया के जाउँ न नेरे ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

देखा सब जग ब्याकुल राम । नित उठि दगधै क्रोध औ काम॥१॥
तुम तो प्रभु जी रहे छिपाय । पाँच मवासी दियो लगाय ॥२॥
एक घड़ी काहु कल ना देय । ज्ञान ध्यान आपुइ हरि लेय॥३॥
देंह धरे का बड़ा जँजाल । जहँ तहँ फिरता गिरसे काल ॥४॥
आई अचानक करत घात । जिव लै भागत कहत बात ॥५॥
या पापी तें कोउ न बाच । नित उठि पेट नचावै नाच ॥६॥
या का उत्तर देवो मोहि । कैसे के कोउ मिलै तोहिं ॥७॥
जियत नरक है गर्भ बास । उपजत बिनसत बड़ी त्रास ॥८॥
कह मलूक यह बिनती मोरी । इन्हें छोड़ि बल जाऊँ तोरी ॥९॥

॥ शब्द ६ ॥

बाबा मुरदे मूँड़ उठाया ।
लागी अंग बाय दुनियाँ की, राम राय बिसराया ॥ १ ॥
आये पहिरि करम की बेड़ी, हाथ हाथ करि गाढ़ी ।
फूले फिरें जनु अमर भये हैं, प्रीति बिषय सों बाढ़ी ॥ २ ॥
काहू के मन चार पाँच की, काहू के मन बीस ।
काहू के मन सात आठ की, सब बाँधे जगदीस ॥ ३ ॥
अब भये सौतिन[2] हाथ केरे, घर बीघा[3] सौ कीन्ह ।
मेरी मेरी कहि उमर गँवाई, कबहुँ राम ना चीन्ह ॥ ४ ॥
दिना चार के घोड़े सोड़े, दिना चार के हाथी ।
कहत मलूका दिना चार में, बिछुरि जायँगे साथी ॥ ५ ॥

(१) आँचल । (२) माया । (३) बिगहा ।

॥ शब्द ७ ॥

मुवा सकल जग देखिया, मैं तो जियत न देखा कोय हो॥टेक॥
मुवा मुई को ब्याहता रे, मुवा ब्याह करि देय।
मुए बराते जात हैं, एक मुवा बधाई लेय हो ॥ १ ॥
मुवा मुए से लड़न को, मुवा जोर लै जाय।
मुरदे मुरदे लड़ि मरे, एक मुरदा मन पछिताय हो ॥ २ ॥
अंत एक दिन मरौगे रे, गलि गुलि जैहै चाम।
ऐसी झूठी देह तें, काहें लेव न साँचा नाम हो ॥ ३ ॥
मरने मरना भाँति है रे, जो मरि जानै कोय।
राम दुवारे जो मरै, फिर बहुरि न मरना होय हो ॥ ४ ॥
इनकी यह गति जानिके, मैं जहँ तहँ फिरौं उदास।
अजर अमर प्रभु पाइया, कहत मलूकादास हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सोते सोते जन्म गँवाया।
माया मोह में सानि पड़ो सो, राम नाम नहिं पाया ॥ १ ॥
मीठी नींद सोये सुख अपने, कबहूँ नहिं अलसाने।
गाफिल होके महल में सोये, फिर पाछे पछिताने ॥ २ ॥
अजहूँ उठो कहाँ तुम बैठे, बिनती सुनो हमारी।
चहूँ ओर में आहट पाया, बहुत भई भुइँ भारी ॥ ३ ॥
बंदीछोर रहत घट भीतर, खबर न काहू पाई।
कहत मलूक राम के पहरा, जागो मेरे भाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

अबधू याही करो बिचार।
दस औतार कहाँ तें आये, किन रे गढ़े करतार ॥ १ ॥
केहि उपदेस भये तुम जोगी, केहि बिधि आतम जारा।
केहि कारन तुम काया सताई, केहि बिधि आतम मारा ॥ २ ॥

थोथे बाँट बाँधि के भोंदू, येहि बिधि जाव न पारा ।
ऋद्धि सिद्धि में बूड़ि मरोगे, पकड़ो खेवनहारा ॥ ३ ॥
अगल बगल का पैंड़ा पकड़ा, दिन दिन चढ़ता भारा ।
कहत मलूक सुनो रे भोंदू, अबिगत मूल बिसारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

नाम हमारा खाक है, हम खाकी बंदे ।
खाकहिं ते पैदा किये, अति गाफिल गंदे ॥ १ ॥
कबहुँ न करते बन्दगी, दुनिया में भूले ।
आसमान को ताकते, घोड़े चढ़ि फूले ॥ २ ॥
जोरू लड़के खुस किये, साहेब बिसराया ।
राह नेकी की छोड़ि के, बुरा अमल कमाया ॥ ३ ॥
हरदम तिस को याद कर, जिन वजूद सँवारा ।
सबै खाक दर खाक है, कुछ समुझ गँवारा ॥ ४ ॥
हाथी घोड़े खाक के, खाक खानखानी[1] ।
कहैं मलूक रहि जायगा, औसाफ निसानी ॥ ५ ॥

॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

अब तो अजपा जपु मन मेरे ॥ टेक ॥
सुर नर असुर टहलुवा जा के, मुनि गंधर्ब जा के चेरे ॥१॥
दस औतार देखि मत भूलो, ऐसे रूप घनेरे ॥२॥
अलख पुरुष के हाथ बिकाने, जब तें नैन निहारे ॥३॥
अबिगत अगम अगोचर अबधू, संग फिरत हैं तेरे ॥४॥
कह मलूक तू चेत अचेता, काल न आवै नेरे ॥५॥

(१) बादशाहत ।

॥ शब्द २ ॥

ऐ अजीज ईमान तू, काहे को खोवै।
हिय राखै दरगाह में, तो प्यारा होवै ॥ १ ॥
यह दुनियाँ नाचीज के, जो आसिक होवै।
भूलै जात खोदाय को, सिर धुन धुन रोवै ॥ २ ॥
इस दुनियाँ नाचीज के, तालिब हैं कुत्ते।
लज्जत में मोहित हुए, दुख सहे बहूते ॥ ३ ॥
जब लगि अपने आप को, तहकीक न जानै।
दास मलूका रब्ब को, क्योंकर पहिचानै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो भाई अपनी करनी नाहीं ॥ टेक ॥
जे करनी का करैं भरोसा, ते जम के घर जाहीं ॥ १ ॥
ना जानूँ धौं कहाँ मुए थे, ना जानूँ कहँ आये।
ना जानूँ हरि गर्भ बसेरा, कौने भाँति बनाये ॥ २ ॥
महा कठिन यह हरि की माया, या तें कौन बचावै।
जौन कहै जड़ मूलहिं त्यागी, तिन को हाथ लगावै ॥ ३ ॥
यह संसार बड़ो भौसागर, प्रलय काल ते भारी।
बूड़त तें या सोई बाचै, जेहि राखै करतारी ॥ ४ ॥
लच्छ गऊ दे अन्न खात थे, राजा नृग से प्यारे।
पुन्न करत जमा और गँवाई, लै गिरगिट कै डारे ॥ ५ ॥
गौतम नारि बड़ी पतिबरता, बहुते कीन्हे दाना।
करनी करि बैकुंठ न पैठी, काहे भई पषाना ॥ ६ ॥
मारहु मान छेम करि बैठो, छोड़ो गर्व गुमाना।
आपा मेटो राम भजो तुम, कहत मलूक दिवाना ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आपा खोज रे जिय भाई।
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै, अंधकार मिटि जाई ॥ १ ॥

जोई मन सोई परमेसुर, कोइ बिरला अवधू जानै।
जौन जोगीसुर सब घट ब्यापक, सो यह रूप बखानै ॥ २ ॥
सब्द अनाहद होत जहाँ तें, तहाँ ब्रह्म कर बासा।
गगन मँडल में करत कलोलै, परम जोति परगासा ॥ ३ ॥
कहत मलूका निरगुन के गुन, कोइ बड़भागी गावै।
क्या गिरही औ क्या बैरागी, जेहि हरि देयँ सो पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

किरपा कर गुरु जुगत बताई। आपा खोजो भरम नसाई ॥१॥
आपा खोजे त्रिभुवन सूझै। गुरु परताप काल से जूझै ॥२॥
सब्द ब्रह्म का करै बिचार। सोई चलै जियत होइ छार ॥३॥
संतन की सेवा चित लावै। पाहन पूजि न मन भरमावै॥४॥
कामिनि कनक कलह का भंडा। इन ठगनिन सारा जग डंडा॥५॥
होत न हँसै मरत ना रोवै। ता को रंड कबहुँ न बिगोवै॥६॥
परम तत्त जो दृढ़ कर रहै। माया मोह में कबहुँ न बहै ॥७॥
गुरु के बचन करै परतीत। सोई सिद्ध जाय जग जीत ॥८॥
सत संतोष हिये में राखै। सो जन नाम रसायन चाखै ॥९॥
काटे कटै न जारे जरै। अर्ध नाम भजन करि तरै॥१०॥
न्यारे होयँ पिता और माई। अगिनि बुझै सीतल होइ जाई॥११॥
मनुवाँ मारि करै नौ खंड। कबहुँ न सहै देह का दंड ॥१२॥
गुरु गोबिंद सार मत दीन्ह। भला भया जो आतम चीन्ह॥१३॥
बड़े भाग से आतम जागा। कहत मलूक सकल भ्रम भागा॥१४॥

॥ शब्द ६ ॥

आपा मेटि न हरि भजे, तेई नर डूबे।
हरि का मर्म न पाइया, कारन कर ऊबे ॥ १ ॥
करें भरोसा पुन्न का, साहेब बिसराया।
बूड़ गये तरबोर[1] को, कहुँ खोज न पाया ॥ २ ॥

---

(१) अथाह।

साध मंडली बैठि के, मूढ़ जाति बखानी।
हम बड़ हम बड़ करि मुए, बूड़े बिन पानी ॥ ३ ॥
तब के बाँधे तेई नर, अजहूँ नहिं छूटे।
पकरि पकरि भलि भाँति से, जमदूतन लूटे ॥ ४ ॥
काम क्रोध सब त्यागि के, जो रामै गावै।
दास मलूका यों कहै, तेहि अलख लखावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

गर्ब न कीजे बावरे, हरि गर्ब प्रहारी।
गर्बहिं तें रावन गया, पाया दुख भारी ॥ १ ॥
जरन खुदी[1] रघुनाथ के, मन नाहिं सोहाती।
जा के जिय अभिमान है, ता की तोरत छाती ॥ २ ॥
एक दया और दीनता, ले रहिये भाई।
चरन गहो जाय साध के, रीझैं रघुराई ॥ ३ ॥
यही बड़ा उपदेस है, परद्रोह न करिये।
कहैं मलूक हरि सुमिर के, भौसागर तरिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

ना वह रीझै जप तप कीन्हे, ना आतम को जारे।
ना वह रीझै धोती टाँगे, ना काया के पखारे ॥ १ ॥
दाया करै धरम मन राखै, घर में रहै उदासी।
अपना सा दुख सब का जानै, ताहि मिलै अबिनासी ॥ २ ॥
सहै कुसब्द बादहू त्यागै, छाँड़ै गर्ब गुमाना।
यही रीझ मेरे निरंकार की, कहत मलूक दिवाना ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सब से लालच का मत खोटा।
लालच तें बैपारी सिद्धी, दिन दिन आवै टोटा[2] ॥ १ ॥

(१) ईर्षा और आपा। (२) घाटा।

हाथ पसारे आँधर जाता, पानी परहि न भाई।
माँगे तें मकु मीच भली, अस जीने कौन बड़ाई ॥ २ ॥
माँगे तें जग नाक सिकोरे, गोबिंद भला न मानै।
अनमाँगे राम गले लगावै, बिरला जन कोइ जानै ॥ ३ ॥
जब लग जिव का लोभ न छूटै, तब लग तजै न माया।
घर घर द्वार फिरै माया के, पूरा गुरु नहिं पाया ॥ ४ ॥
यह मैं कही जे हरि रँग राते, संसारी को नाहीं।
संसारी तो लालच बंधा, देस देसान्तर जाहीं ॥ ५ ॥
जो माँगे सो कछू न पावै, बिन माँगे हरि देता।
कहैं मलूक निःकाम भजै जे, ते आपन करि लेता ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

मन तें इतने भरम गँवावो।
चलत बिदेस बिप्र जनि पूछो, दिन का दोष न लावो ॥ १ ॥
संझा होय करो तुम भोजन, बिनु दीपक के बारे।
जौन कहैं असुरन की बेरिया, मूढ़ दई के मारे ॥ २ ॥
आप भले तो सबहि भलो है, बुरा न काहू कहिये।
जा के मन कछु बसै बुराई, ता सों भागे रहिये ॥ ३ ॥
लोक बेद का पैंड़ा औरहि, इनकी कौन चलावै।
आतम मारि पषाने पूजैं, हिरदे दया न आवै ॥ ४ ॥
रहो भरोसे एक राम के, सूरे का मत लीजै।
संकट पड़े हरज नहिं मानो, जिय का लोभ न कीजै ॥ ५ ॥
किरिया करम अचार भरम है, यही जगत का फंदा।
माया जाल में बाँधि अँड़ाया[1], क्या जानै नर अंधा ॥ ६ ॥
यह संसार बड़ा भौसागर, ता को देखि सकाना[2]।
सरन गये तोहिं अब क्या डर है, कहत मलूक दिवाना ॥ ७ ॥

(१) गिराया। (२) डरा।

॥ शब्द ११ ॥

है हजूर नहिं दूर, हमा - जा भर पूर।
ज़ाहिरा जहान, जा का ज़हूर पुर नूर॥ १॥
बेसबूह बेनमून, बेचगून ओस्त।
हमा ओस्त हमा अज़ोस्त, जान - जानाँ दोस्त॥ २॥
शबो रोज़ ज़िकर, फ़िकरही में मशगूल।
तेही दरगाह बीच, पड़े हैं क़बूल॥ ३॥
साहेब है मेरा पीर, क़ुदरत क्या कहिये।
कहता मलूक बंदा, तक पनाह रहिये॥ ४॥

॥ शब्द १२ ॥

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे।
अवसर न चूक भोंदू, पायो भला दाँव रे॥ १॥
जिन तो को तन दीन्हो, ता को न भजन कीन्हो।
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे॥ २॥
रामजी को गाय गाय, रामजी को रिझाव रे।
रामजी के चरन कमल, चित्त माहिं लाव रे॥ ३॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे तैं झूठी आस।
आनँद मगन होइ के, हरि गुन गाव रे॥ ४॥

॥ शब्द १३ ॥

रस रे निर्गुन राग से, गावै कोइ जाग्रत जोगी।
अलग रहै संसार से, सो (इस) रस का भोगी॥ १॥
भरम करम सब छाँड़, अनूठा यह मत पूरा।
सहजै धुन लागी रहै, बाजे अनहद तूरा॥ २॥
लहरैं उठतीं ज्ञान की, बरसै रिमझिम मोती।
गगन गुफा में बैठ के, देखै जगमग जोती॥ ३॥
सिव नगरी आसन किया, सुन ध्यान लगाया।
तीनों दसा बिसार के, चौथा पद पाया॥ ४॥

अनुभय उपजा भय गया, हद तज बेहद लागा।
घट उँजियारा होइ रहा, जब आतम जागा॥ ५॥
सब रँग खेलै सम रहै, दुबिधा मनहिं न आनै।
कह मलूक सोइ रावला, मेरे मन मानै॥ ६॥

॥ शब्द १४ ॥

बाजीगरै पसारी बाजी। भूल भुलायो सब का जी॥१॥
देखा मैं मुल्ला बौराना। नाहक पढ़े किताब कुराना॥२॥
है हजूर वह दूर बतावै। बाँग जिकिर धौं किसे सुनावै॥३॥
रोजा करै निमाज गुजारै। उरुस[1] करै और आतम मारै॥४॥
वो भी मुल्ला बड़ा कसाई। जिन तुझको तदबीर सिखाई॥५॥
है बेपीर औ पीर कहावै। करि मुरीद तदबीर सिखावै॥६॥
ऐसा मुर्सिद कबहुँ न करिये। खून करावै तिस तें डरिये॥७॥
अपने मूड़ अजाब चढ़ावै। पैगम्बर का धोखा लावै॥८॥
ऐसा मुर्सिद करै जो कोई। दोजख जाय परैगा सोई॥९॥
दरदमंद दुरवेस कहावै। जो मोहि राम की रीझ बतावै॥१०॥
साहेब को बैठे लौ लाई। काहू की नहिं करै तमाई[2]॥११॥
पाँच तत्त से रहै नियारा। सो दुर्वेस खोदा का प्यारा॥१२॥
जो प्यासे को देवै पानी। बड़ी बंदगी मोहमद मानी॥१३॥
जो भूखे को अन्न खवावै। सो सिताब[3] साहेब को पावै॥१४॥
अपने मन तदबीर कराई। साहेब के दर होय बड़ाई॥१५॥
जो फकीर ऐसा कोइ होय। फिरै बेबाक न पूछे कोय॥१६॥
छोड़ै गुस्सा जीवत मरै। तेहि इजराइल सिजदा करै॥१७॥
अपना सा दुख सब का जानै। दास मलूका ता को मानै॥१८॥

———

(१) नियाज़, क़ुर्बानी। (२) लालच। (३) जल्द।

॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

अब मैं अनुभव पदहिं समाना ॥टेक॥
सब देवन को भर्म भुलाना, अविगति हाथ बिकाना ॥ १ ॥
पहिला पद है देई देवा, दूजा नेम अचारा ।
तीजे पद में सब जग बंधा, चौथा अपरम्पारा ॥ २ ॥
सुन्न महल्ल में महल हमारा, निरगुन सेज बिछाई ।
चेला गुरु दोउ सैन करत हैं, बड़ी असाइस[1] पाई ॥ ३ ॥
एक कहै चल तीरथ जइये, (एक) ठाकुरद्वार बतावै ।
परम जोति के देखे संतो, अब कछु नजर न आवै ॥ ४ ॥
आवा गवन का संसय छूटा, काटी जम की फाँसी ।
कह मलूक मैं यही जानिके, मित्र कियो अबिनासी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सबहिन के हम सबै हमारे । जीव जंतु मोहिं लगैं पियारे ।१।
तीनों लोक हमारी माया । अंत कतहुँ से कोइ नहि लाया ।२।
छत्तिस पवन हमारी जात । हमहीं दिन और हमहीं रात ।३।
हमहीं तरवर कीट पतङ्गा । हमहीं दुर्गा हमहीं गङ्गा ।४।
हमहीं मुल्ला हमहीं काजी । तीरथ बरत हमारी बाजी ।५।
हमहीं पंडित हमीं बैरागी । हमहीं सूम हमीं हैं त्यागी ।६।
हमहीं देव औ हमहीं दानो । भावै जा को जैसा मानो ।७।
हमहीं चोर हमही बटपार । हम ऊँचे चढ़ि करैं पुकार ।८।
हमहि महावत हमहीं हाथी । हमहीं पाप पुन्न के साथी ।९।
हमहि अस्व[2] हमहीं असवार । हमहि दास हमहीं सरदार ।१०।
हमहीं सूरज हमहीं चंदा । हमहीं भये नन्द के नन्दा ।११।
हमहीं दसरथ हमहीं राम । हमरै क्रोध हमारे काम ।१२।

---

(१) आसाइश, आराम । (२) घोड़ा ।

हमहीं रावन हमहीं कंस। हमहीं मारा अपना बंस।१३।
हमहिं जियावैं हमहीं मारैं। हमहीं बोरैं हमहीं तारैं।१४।
जहाँ तहाँ सब जोति हमारी। हमहिं पुरुष हमहीं है नारी।१५।
ऐसी बिधि कोई लव लावै। सो अविगत से टहल करावै।१६।
सहै कुसब्द और सुमिरै नाँव। सब जग देखै एकै भाव।१७।
या पद का कोइ करै निबेरा। कह मलूक मैं ता का चेरा।१८।

॥ शब्द ३ ॥

बाबा मन का है सिर तले ॥ टेक ॥
माया के अभिमान भूले, गर्ब ही में गले ॥ १ ॥
जिभ्या कारन खून कीये, बाँधि जमपुर चले ॥ २ ॥
रामजी सों भये बेमुख, अगिन अपनी जले ॥ ३ ॥
हरि भजे से भये निरभय, टारहू नहिं टरे ॥ ४ ॥
कह मलूका जहँ गरीबी, तेई सब से भले ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

तू साहेब लीये खड़ा, बन्दा नासबूरा।
जैसा जिसको चाहिये, देता भरपूरा ॥ १ ॥
लाख करोड़ जो गाँठि में, तौ भी यह रोवै।
मरता मारे फिकिर के, सुख कबहुँ न सोवै ॥ २ ॥
आँखैं फेरै बुरी भाँति, देखत डर लागै।
लेखा जो कौड़ी चलै, दिन चारक जागै ॥ ३ ॥
बिन संतोष दुखी भया, बहुते भरमाया।
कहत मलूक यह जानकर, सरनागति आया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

राम मैं ससा भयो तन धरि के।
प्रभु की सरन में कीन्ह बिलावट आनि घुसा मैं डरिके ॥ १ ॥
कुकरा पाँच पचीस कुकरिया सदा रहैं मोहिं घेरे।
ठाढ़ होउँ तौ पिंडुरी पकरैं बैठे आँखि गुरेरें ॥ २ ॥

कलुवा कबरा मोतिया झबरा बुचवा मोहिं डेरवावे।
जब तें लियो तिहारो पीछा कोऊ निकट न आवे ॥ ३ ॥
इन पाँचो में देखा बिष ही एको नहिं मन माना।
काटि काटि मैं कीन्ह अहेरा कहत मलूक दिवाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बन्दे दुनियाँ की दीन गँवाया[1]।
सो दुनियाँ तेरे संग न लागी, मूड़ अजाब चढ़ाया ॥ १ ॥
करम जो लागा बदी खलक की, किन तुझको फर्माया।
गुनहगार तूँ हुआ सरासर, दोजख बाँध चलाया ॥ २ ॥
खाक सेती जिन पैदा कीन्हा, सो साहेब बिसराया।
मोहकम[2] मार पड़ी गुरजन की, तब कछु ज्वाब न आया ॥ ३ ॥
अब किसहूँ को दोष न दीजै, गन्दा अमल कमाया।
कह मलूक जस खिजमत पहुँचा, सोई नतीजा पाया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मन नहिं तौलै यार, का रे तौलै बनियाँ ॥ टेक ॥
घाट बाट सोध लेइ, सम रहे नकुनियाँ[3]।
बिसरै ना सुरति, नाहिं फेरि होय तनियाँ ॥ १ ॥
पाँच औ पचीस चोर, लूटिहैं दुकनियाँ।
सुनहि ना गोहार कोउ, हाकिम हैरनियाँ ॥ २ ॥
कहत मलूकदास, तौलै जब चार रास।
साहेब मिल साहु होय, मिलै तब दमनियाँ[4] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

दीन-बंधु दीना-नाथ मेरी तन हेरिये ॥ टेक ॥
भाई नाहि बन्धु नाहिं कुटुम परिवार नाहिं,
ऐसा कोई मित्र नाहिं जाके ढिग जाइये ॥ १ ॥

---

(१) स्वार्थ के लिये परमार्थ खोया। (२) भारी। (३) डण्डी के सिरे। (४) दाम।

सोने की सलैया नाहिं रूपे का रुपैया नाहिं,
कौड़ी पैसा गाँठ नहीं जासे कछु लीजिये ॥ २ ॥
खेती नाहिं बारी नाहिं बनिज ब्यौपार नाहिं,
ऐसा कोई साहु नाहिं जासों कछु माँगिये ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास छोड़दे पराई आस,
राम धनी पाय के अब का की सरन जाइये ॥ ४ ॥

—

कबित्त

(१)

परम दयाल राया राय परसोत्तम जी,
ऐसो प्रभु छाँड़ि और कौन के कहाइये ॥ १ ॥
सीतल सुभाव जा के तामस को लेस नहीं,
मधुर बचन कहि राखे समझाइये ॥ २ ॥
भक्त - बछल गुन - सागर कला - निधान,
जाको जस पाँत नित बेदन में गाइये ॥ ३ ॥
कहत मलूक बल जाउँ ऐसे दरस की,
अधम - उधार जा के देखे सुख पाइये ॥ ४ ॥

(२)

जौन कोई भूखा गोपाल की मोहब्बत का।
तौन दुर्वेसन का पैंड़ा निराला है ॥ १ ॥
रहते महजूज[1] वे तो साहेब की सूरत पर।
दुनियाँ को तर्क[2] मार दीन को सम्हाला है ॥ २ ॥
किसी से न करैं स्वाल उनका कुछ और ख्याल।
फिरते अलमस्त वजूद[3] भी बिसारा है ॥ ३ ॥
कहता मलूक उन्हें सूझता है बेचुगून[4]।
किसी की गरज नहीं अन्दर अँधियारा है ॥ ४ ॥

---

(१) पगे हुए। (२) त्याग कर। (३) देह। (४) बेचून। (५) बेमिस्ल।

(३)

माला कहाँ औ कहाँ तसबीह,
अब चेत इनहिं कर टेक न टेकै ॥ १ ॥
काफिर कौन मलेच्छ कहावत,
संध्या निवाज समय करि देखै ॥ २ ॥
है जमराज कहाँ जबरील है,
काजी है आप हिसाब के लेखै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्य जमा कर बूझत,
देत हिसाब कहाँ धरि फेकै ॥ ४ ॥
दास मलूक कहा भरमौ तुम,
राम रहीम कहावत एकै ॥ ५ ॥

(४)

माला कहाँ और कहाँ तसबीह,
अब चेत इनहिं कर टेक न टेकी ॥ १ ॥
बाँधे डोल अकास पताल लौं,
झूलन जात कहे हरि सेती ॥ २ ॥
लोक की लाज में होत अकाज है,
कौन सहे मेरे साँसत एती ॥ ३ ॥
दास मलूक दिन दुइ की बात है,
पायो राम छुट्यो जम सेती ॥ ४ ॥

(५)

बीर रघुबीर पैगम्बर खोदा मेरे,
कादिर करीम काजी माया मत खोई है ॥ १ ॥
राम मेरे प्रान रहमान मेरे दीन इमान,
भूल गयो भैया सब लोक लाज धोई है ॥२॥
कहत मलूक मैं तो दुबिधा न जानौं दूजी,
जोई मेरे मन में नैनन में सोई है ॥ ३ ॥

हरि हजरत मोहिं माधव मकुन्द की सौं,
छाँड़ि केसवराय मेरो दूसरो न कोई है ॥ ४ ॥

(६)

जिसके दीदार को मुसाफिरी को दिल हुआ।
बहुत खूब ऐसा जो नगीच[१] कर पाइये ॥ १ ॥
खाब सी दुनियाँ को दिल कौन करै सात पाँच[२]।
बन्दे हैं जिसके क्यों न तिसके कहलाइये ॥ २ ॥
अगम अगोचर सबहिन में रहता नियार।
जा को जस नीत वर्त्त संतन बार बार गाइये ॥ ३ ॥
कहता मलूक महबूब पिया खूब यार।
सिर लगाय जमीं में सिरदा[३] कराइये ॥ ४ ॥

(७)

बार बार करता हूँ नसीहत मैं तेरी तईं।
क्यों बे हरामखोर साँईं तू बिसारा है ॥ १ ॥
जिसका नित नोन खात मुतलक भी ना डरात।
अच्छा वजूद पाय औरत से हारा है ॥ २ ॥
कौल से बेकौल हुआ किसी की न लेत दुआ।
दोजख[४] के लिये दिल कौन कौन मारा है ॥ ३ ॥
कहता मलूक अब तोबा कर साहेब से।
छाँड़ि दे कुराह जिन जारे पर जारा है ॥ ४ ॥

(८)

बंदा तैं गंदा गुनाह करै बार बार।
साँईं तू सिरजनहार मन में न आनिये ॥ १ ॥
हाथ कछु मेरे नाहीं हाथ सब तेरे साँईं।
खलक के हिसाब बीच मुझको मत सानिये ॥ २ ॥

---

(१) पास। (२) हैरान, डाँवाडोल। (३) सिजदा। (४) पेट।

रहम की नजर कर कुरहम दिल से दूर कर।
किसी के कहे सुने चुगली मत मानिये॥ ३ ॥
कहता मलूक मैं रहता पनाह तेरी।
दाता दयाल मुझे अपना कर जानिये॥ ४ ॥

(९)

गाफिल है बंदा गुनाह करै बार बार।
काम पड़े साहेब धौं कैसा फरमावैगा॥ १ ॥
आखिर जमाने को डरता है मेरा दिल।
जब जबरील[1] हाथ गुर्ज लिये आवैगा॥ २ ॥
खाब सो दुनियाँ दिल को न करै सात पाँच।
काली पीली आँखें कर फिरिस्ता दिखलावैगा॥ ३ ॥
कहता मलूक किसी मुल्क में बचाव नहीं।
अब कीजे किरपा तब मेरे मन भावैगा॥ ४ ॥

(१०)

भील कद करी थी भलाई जिया आप जान।
फील कद हुआ था मुरीद कहु किसका॥ १ ॥
गीध कद ज्ञान की किताब का किनारा छुआ।
ब्याध और बधिक निसाफ[2] कहु तिसका॥ २ ॥
नाग कद माला लैके बंदगी करी थी बैठ।
मुझको भी लगा था अजामिल का हिसका॥ ३ ॥
एते बदराहों को बदी करी थी माफ।
जन मलूक अजातो पर एतो करी रिस का॥ ४ ॥

(११)

मेहर की कफनी औ कुलाह भी मेहर का।
मेहर का मुतंगा[3] इस कमर में लगाइये॥ १ ॥

(१) मौत का फ़िरिश्ता। (२) इन्साफ़। (३) मूँज की करधनी जो साधू लोग पहिनते हैं।

मेहर का जामा और तोमा[1] भी मेहर का ।
मेहर का आपा इस दिल को पिलाइये ॥ २ ॥
मेहर का आसा[2] और तमासा भी मेहर का ।
मेहर के महल बिच मेहरबान को मनाइये ॥ ३ ॥
कहता मलूक बन्दे कहर की लहर में ।
कोटिक बह गये बिन मेहर मेहरबान किस राह से पाइये ॥४॥

(१२)

अदम कबित्त का जिसकी कबिताई करूँ,
याद करूँ उसको जिन पैदा मुझे किया है ॥ १ ॥
गर्भ बास पाला आतस में नहिं जाला,
तिसको मैं बिसारूँ तो मैं किसकी आस जिया हूँ ॥ २ ॥
नालत इस दुनियाँ को जो दीन से बेदीन करै,
खाक ऐसे खाने जिन ईमान बेंच लिया है ॥ ३ ॥
कहता मलूक मैं बिकाना हरि मूरत पर,
जिस के दीदार से जुड़ाता मेरा हिया है ॥ ४ ॥

(१३)

सुपने के सुक्ख देख मोह रहे मूढ़ नर,
जानत हमारे दिन ऐसहि बिहायँगे ॥ १ ॥
क्या करैंगे भोग अच्छी सुन्दरी रमैंगे नित्त,
छाँह को लै चारि जून खूँद खूँद खायँगे ॥ २ ॥
सीकरा सो काल है कलसरी[3] सी लपेट लेहै,
चंगुल के तले दबे चिचयायँगे ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास लेखा देत होइहै दुक्ख,
बड़े दरबार जाय अन्त पछितायँगे ॥ ४ ॥

(१४)

दीन-दयाल सुनी जब तें तब तें हिया में कछु ऐसी बसी है ।
तेरो कहाय के जाउँ कहाँ मैं तेरे हित की पट[4] खैंच कसी है ॥१॥

---

(१) तोंबा । (२) डण्डा, छड़ी । (३) गौरैया चिड़िया । (४) पटका ।

तेरोई एक भरोस मलूक को तेरे समान न दूजो जसी है।
एहो मुरारि पुकारि कहौं अब मेरी हँसी नहिं तेरो हँसी है ॥२॥

साखी

॥ गुरुदेव ॥

जीती बाजी गुर प्रताप तें, माया मोह निवार।
कहैं मलूक गुरु कृपा तें, उतरा भवजल पार ॥ १ ॥
सुखद पंथ गुरुदेव यह, दीन्हो मोहिं बताय।
ऐसो ऊपट[1] पाय अब, जग मग चलै बलाय ॥ २ ॥
भ्रम भागा गुरु बचन सुनि, मोह रहा नहिं लेस।
तब माया छल हित किया, महा मोहनी भेस ॥ ३ ॥
ता को आवत देखि कै, कही बात समुझाय।
अब मैं आया हरि सरन, तेरी कछु न बसाय ॥ ४ ॥
मलुका सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानही, सो फकीर बेपीर ॥ ५ ॥
बहुतक पीर कहावते, बहुत करत हैं भेस।
यह मन कहर खोदाय का, मारे सो दुरबेस ॥ ६ ॥
पीर पीर सब कोई कहे, पीरे चीन्हत नाहिं।
जिन्दा पीर को मारि के, मुरदहिं ढूँढ़न जाहिं ॥७ ॥

॥ साध जन ॥

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय।
कहैं मलूक जहाँ संत जन, तहाँ रमैया जाय ॥ ८ ॥
भेष फकीरी जे करै, मन नहिं आवै हाथ।
दिल फकीर जे हो रहे, साहेब तिनके साथ ॥ ९ ॥

॥ नाम ॥

जीवहुँ तें प्यारे अधिक, लागैं मोहीं राम।
बिन हरि नाम नहीं मुझे, और किसी से काम ॥१०॥

---

(१) उपरवार।

कह मलूक हम जबहि तें, लीन्ही हरि की ओट।
सोवत हैं सुख नींद भरि, डारि भरम की पोट ॥११॥
उहाँ न कबहूँ जाइये, जहाँ न हरि का नाम।
डीगंबर[1] के गाँव में, धोबी का क्या काम ॥१२॥
राम राम के नाम को, जहाँ नहीं लवलेस।
पानी तहाँ न पीजिये, परिहरिये सो देस ॥१३॥
गाँठी सत्त कुपीन[2] में, सदा फिरै निःसंक।
नाम अमल माता रहै, गिनै इन्द्र को रंक ॥१४॥
राम नाम जिन जानिया, तेई बड़े सपूत।
एक राम के भजन बिन, काँगा[3] फिरै कपूत ॥१५॥
राम नाम एकै रती, पाप के कोटि पहाड़।
ऐसी महिमा नाम की, जारि करै सब छार ॥१६॥
राम नाम औषध करो, हिरदे राखो याद।
संकट में लौ लाइये, दूर करै सब व्याध ॥१७॥
धर्महिं का सौदा भला, दाया जग ब्योहार।
राम नाम की हाट ले, बैठा खोल किवार ॥१८॥
रहूँ भरोसे राम के, बनिजे[4] कबहुँ न जावँ।
दास मलूका यों कहै, हरि बिड़वे[5] मैं खावँ ॥१९॥
साहेब मेरा सिर खड़ा, पलक पलक सुधि ले।
जबहीं गुरु किरपा करें, तबहिं राम कछु दे ॥२०॥
मोदी सब संसार है, साहेब राजा राम।
जा पर चिट्ठी ऊतरे, सोई खरचे दाम ॥२१॥
औरहिं चिन्ता करन दे, तू मत मारै आह।
जा के मोदी राम से, ताहि कहा परवाह ॥२२॥

---

(१) नागा। (२) लँगोटी। (३) कंगाल। (४) ब्योपार को। (५) कमाय।

॥ बिनती ॥

नमो निरंजन निरंकार, अविगति पुरुष अलेख।
जिन संतन के हित धर्यो, जुग जुग नाना भेख ॥२३॥
हरि भक्तन के काज हित, जुग जुग करी सहाय।
सो सिव सेस न कहि सकै, कहा कहूँ मैं गाय ॥२४॥
राम राय असरन सरन, मोहिं आपन करि लेहु।
संतन सँग सेवा करौं, भक्ति मजूरी देहु ॥२५॥
भक्ति मजूरी दीजिये, कीजै भवजल पार।
बोरत है माया मुझे, गहे बाँह बरियार ॥२६॥

॥ प्रेम ॥

प्रेम नेम जिन ना कियो, जीतो नाहीं मैन[१]।
अलख पुरुष जिन ना लख्यो, छार परो तेहि नैन ॥२७॥
कठिन पियाला प्रेम का, पिये जो हरि के हाथ।
चारो जुग माता रहै, उतरै जिय के साथ ॥२८॥
बिना अमल माता रहै, बिन लस्कर बलवंत।
बिना बिलायत साहेबी, अंत माहिं बेअंत ॥२९॥
रात न आवे नींदड़ी, थरथर काँपै जीव।
ना जानूँ क्या करैगा, जालिम मेरा पीव ॥३०॥
करै भक्ति भगवंत की, करै कबहुँ नहिं चूक।
हरि रस में राचो रहै, साँची भक्ति मलूक ॥३१॥
मलूक सो माता सुंदरी, जहाँ भक्त औतार।
और सकल बाँझै भईं, जनमे खर कतवार ॥३२॥
सोई पूत सपूत है, जो भक्ति करे चित लाय।
जरा मरन तें छुटि परै, अजर अमर होइ जाय ॥३३॥
सब बाजे हिरदे बजैं, प्रेम पखावज तार।
मंदिर ढूँढ़त को फिरै, मिल्यो बजावनहार ॥३४॥

(१) कामदेव।

करै पखावज प्रेम का, हृदय बजावै तार।
मनै नचावै मगन होय, तिन का मता अपार ॥३५॥

॥ ज्ञान ॥

जब लग थो अँधियार घर, मूस थके सब चोर।
जब मंदिल दीपक बरयो, वही चोर धन मोर ॥३६॥
मन मिरगा बिन मूड़ का, चहुँदिस चरने जाय।
हाँक ले आया ज्ञान तब, बाँधा ताँत लगाय ॥३७॥

॥ गुप्त की महिमा ॥

जो तेरे घट प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव।
अंतरजामी जानिहै, अंतरगत का भाव ॥३८॥
गुप्त प्रगट जेती करी, मेरे मन की खूम।
अंतरजामी रामजी, सब तुम को मालूम ॥३९॥
सुमिरन ऐसा कीजिये, दूजा लखै न कोय।
ओंठ न फरकत देखिये, प्रेम राखिये गोय ॥४०॥
माला जपों न कर जपों, जिभ्या कहों न राम।
सुमिरन मेरा हरि करै, मैं पाया बिसराम ॥४१॥

॥ मूर्त्ति पूजा, तीर्थ भ्रमन, कर्म्म धर्म्म ॥

साधो दुनियाँ बावरी, पत्थर पूजन जाय।
मलूक पूजे आतमा, कछु माँगै कछु खाय ॥४२॥
जेती देखै आतमा, तेते सालिगराम।
बोलनहारा पूजिये, पत्थर से क्या काम ॥४३॥
आतम राम न चीन्हही, पूजत फिरै पषान।
कैसेहु मुक्ति न होयगी, कोटिक सुनो पुरान ॥४४॥
किरतिम देव न पूजिये, ठेस लगे फुटि जाय।
कहैं मलूक सुभ आतमा, चारो जुग ठहराय ॥४५॥
देवल पुजे कि देवता, की पूजे पाहाड़।
पूजन को जाँता भला, जो पीस खाय संसार ॥४६॥

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस।
जिनके हिरदे हरि बसै, कोटि तिरथ तिन पास ॥४७॥
संध्या तरपन सब तजा, तीरथ कबहुँ न जाउँ।
हरि हीरा हिरदे बसै, ताही भीतर न्हाउँ ॥४८॥
मक्का मदिना द्वारका, बद्री और केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहैं मलूक बिचार ॥४९॥
राम राय घट में बसै, ढूँढ़त फिरैं उजाड़।
कोइ कासी कोइ प्राग में, बहुत फिरैं झख मार ॥५०॥

॥ दया ॥

दुखिया जन कोइ दूखवै, दुखिए अति दुख होय।
दुखिया रोय पुकारिहै, सब गुड़ माटी होय ॥५१॥
हरी डारि ना तोड़िये, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना सा जिव जान ॥५२॥
जे दुखिया संसार में, खोवो तिन का दुक्ख।
दलिद्दर सौंप मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख ॥५३॥

॥ हिंसा ॥

पीर सभन की एक सी, मूरख जानत नाहिं।
काँटा चूभे पीर होय, गला काट कोउ खाय ॥५४॥
कुंजर चींटी पशू नर, सब में साहेब एक।
काटे गला खोदाय का, करै सूरमा लेख ॥५५॥
सब कोउ साहेब बन्दते, हिन्दू मूसलमान।
साहेब तिन को बन्दता, जिसका ठौर इमान ॥५६॥

॥ दया ॥

दया धर्म हिरदे बसै, बोलै अमृत बैन।
तेई ऊँचे जानिये, जिन के नीचे नैन ॥५७॥
सब पानी की चूपरी, एक दया जग सार।
जिन पर-आतम चीन्हिया, तेही उतरे पार ॥५८॥

॥ दुर्जन ॥

मलूक बाद न कीजिये, क्रोधै देव बहाय।
हार मानु अनजान तें, बक बक मरै बलाय ॥५९॥
कलिप डाहि[1] जे लेत है, या तें पाप न और।
कह मलूक तेहि जीव को, तीन लोक नहि ठौर ॥६०॥
मूरख को का बोधिये, मन में रहो बिचार।
पाहन मारे क्या भया, जहँ टूटै तरवार ॥६१॥
चार मास घन बरसिया, महा सुखम घन नीर।
ऐसी मोहकम बखतरी, लगा न एको तीर ॥६२॥
दाग जो लागा लील का, सौ मन साबुन धोय।
कोटि बार समझाइया, कौवा हंस न होय ॥६३॥
दुर्जन दुष्ट कठोर अति, ता की जात न ऐंड़।
स्वान पूँछ सुधरै नहीं, अंत टेढ़ की टेढ़ ॥६४॥
चार पहर दिन होत रसोई, तनिक न निकसत टूक।
कह मलूक ता मंदिल में, सदा रहत हैं भूत ॥६५॥
दुखदाई सब तें बुरा, जानत है सब कोय।
कह मलूक कंटक मुवा, धरती हलकी होय ॥६६॥

॥ मन ॥

जो मन गया तो जान दे, दृढ़ करि राखु सरीर।
बिन ज़िह[2] चढ़ी कमान का, क्या लागेगा तीर ॥६७॥
कोई जीति सकै नहीं, यह मन जैसे देव।
याके जीते जीत है, अब मैं पायो भेव ॥६८॥
मन जीते बिन जो करै, साधन सकल कलेस।
तिन का ज्ञान अज्ञान है, नाहि गुरू उपदेस ॥६९॥
तैं मत जानै मन मुवा, तन करि डारा खेह।
ता का क्या इतबार है, जिन मारे सकल बिदेह ॥७०॥

---

(१) कलपा और सता कर। (२) चिल्ला या धनुप की डोरी।

॥ माया ॥

माया मिसरी की छुरी, मत कोई पतियाय।
इन मारे रसबाद के, ब्रह्महिं ब्रह्म लड़ाय ॥७१॥
माया मगन महंत के, तुम मत बैठो पास।
कौड़ी कारन लड़ि मरै, कथनी कथै पचास ॥७२॥
नारी नाहि निहारिये, करै नैन की चोट।
कोइ एक हरि जन ऊबरे, पारब्रह्म की ओट ॥७३॥
नारी घोंटी अमल की, अमली सब संसार।
कोइ ऐसा सूफी ना मिला, जो सँग उतरै पार ॥७४॥

॥ चेतावनी ॥

जागो रे अब जागो भैया, सिर पर जम की धार।
ना जानूँ कौने घरी, केहि लेजैहै मार ॥७५॥
गर्ब भुलाने दॆंह के, रचि रचि बाँधे पाग।
सो दॆंही नित देखि के, चोंच सँवारे काग ॥७६॥
सुन्दर दॆंही पाय के, मत कोइ करै गुमान।
काल दरेरा खायगा, क्या बूढ़ा क्या ज्वान ॥७७॥
सुन्दर दॆंही देखि के, उपजत है अनुराग।
मढ़ी न होती चाम की, तो जीवत खाते काग ॥७८॥
उतरे आय सराय में, जाना है बड़ कोह।
अटका आकिल काम बस, ली भठियारी मोह ॥७९॥
जेते सुख संसार के, इकट्ठे किये बटोर।
कन थोरे काँकर घने, देखा फटक पछोर ॥८०॥
इस जीने का गर्ब क्या, कहाँ दॆंह की प्रीत।
बात कहत ढह जात है, बारू की सी भीत ॥८१॥
मलूक कोटा झाँझरा, भीत परी भहराय।
ऐसा कोई ना मिला, जो फेर उठावै आय ॥८२॥

देंही होय न आपनी, समुझ परी है मोहिं।
अबहीं तें तजि राख तूँ, आखिर तजिहै तोहिं ॥८३॥

॥ मिश्रित ॥

काम मिलावै राम को, जो राखै यह जीत।
दास मलूका यों कहै, जो मन आवै परतीत ॥८४॥
वहाँ न कोई पहूँचा, जहाँ बसत हैं राम।
महा बिकट वो पंथ है, पैंड़ा मारै काम ॥८५॥
जहाँ जहाँ दुख पाइया, गुरु को थापा सोय।
जबहीं सिर टक्कर लगै, तब हरि सुमिरन होय ॥८६॥
आदर मान महत्त्व सत, बालापन को नेह।
यह चारो तबहीं गये, जबहिं कहा कछु देह ॥८७॥
हरि रस में नाहीं रचा, किया काँच ब्योहार।
कह मलूक वोही पचा, प्रभुता को संसार ॥८८॥
प्रभुताही को सब मरै, प्रभु को मरै न कोय।
जो कोई प्रभु को मरै, तो प्रभुता दासी होय ॥८९॥
मानुष बैठे चुप करे, कदर न जानै कोय।
जबहीं मुख खोलै कली, प्रगट बास तब होय ॥९०॥
सब कलियन में बास है, बिना बास नहि कोय।
अति सुचित्त में पाइये, जो कोइ फूली होय ॥९१॥